कक्षा - सातवीं

विषय - हिंदी

पाठ- 4 मित्रता

1. शब्दार्थ
2. मौखिक प्रश्न

क. किन लोगों की जान-पहचान जल्दी बढ़ जाती है?

उत्तर- जो एकांत-प्रिय नहीं होते उन लोगों की जान-पहचान जल्दी बढ़ जाती है।

ख. हेल-मेल मित्रों के रूप में कब परिवर्तित हो जाता है?

उत्तर- कुछ लोग मिलनसार होते हैं, बार-बार लोगों से मिलते हैं यही हेल-मेल बढ़ते -बढ़ते मित्रता के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

ग. हमें कैसे मित्र की खोज करनी चाहिए?

उत्तर-हमें ऐसे मित्र की खोज करनी चाहिए जो हमें उत्तम तापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता करें।

घ. क्या समान स्वभाव और आचरण वाले व्यक्ति ही घनिष्ठ मित्र हो सकते हैं?

उत्तर- मित्रता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि समान स्वभाव और आचरण हो। दो अलग-अलग स्वभाव वाले व्यक्ति भी मित्र बन सकते हैं जैसे कर्ण और दुर्योधन।

3. लिखितप्रश्न

क. जीवन की सफलता किस पर निर्भर करती है और क्यों?

उत्तर- जीवन की सफलता अच्छे, सच्चे और विश्वसनीय मित्र पर निर्भर करती है क्योंकि संगति का प्रभाव हमारे आचरण और जीवन पर बड़ा-भारी पड़ता है।

ख. लेखक अपने से अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों के साथ दोस्ती करना क्यों बुरा समझते हैं?

उत्तर- लेखक अपने से अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों के साथ दोस्ती करना इसलिए बुरा समझते हैं क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है।

ग. सामान्यतः लोग दोस्ती क्या देखकर कर लेते हैं?

उत्तर- सामान्यतः लोग हंसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस-ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग उन्हें अपना मित्र बना लेते हैं।

घ. विश्वासपात्र मित्र जीवन की संजीवनी सिद्ध होता है, कैसे?

उत्तर- विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा होती है वे उत्तम संकल्पों में हमें दृढ़ करते हैं, दोष और त्रुटियों से हमें बचाते हैं जिसे ऐसा मित्र मिल जाए, उसे समझना चाहिए कि उसे खजाना मिल गया। इसलिए कहा गया है विश्वासपात्र मित्र

जीवन की संजीवनी है।

ड. अच्छे मित्र से नई शक्ति की योजना कैसे संभव होती है?

उत्तर- मित्रता एक नई शक्ति की योजना है मित्रों ने मनुष्य के जीवन को साधु और श्रेष्ठ बनाया है। उन्हें मूर्खता और कुमार्ग के गड्ढों से निकाल कर सात्विकता के पवित्र शिखर पर पहुंचाया है।

बात भाषा की

लोम शब्द लिखिए।

मित्रता × शत्रुता
परिमार्जित × अपरिमार्जित
विरोध × समर्थन

ख. परिपक्व × अपरिपक्व
ङ. सौभाग्य × दुर्भाग्य
ज. उत्साह × निरुत्साह

ग. मूर्खता × बुद्धिमानी
च. प्रतिष्ठित × अप्रतिष्ठित
झ. समानता × असमानता

सर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए।

	उपसर्ग	मूल शब्द
आचरण -	आ +	चरण
संकल्प -	सम् +	कल्प
अत्यंत -	अति +	अंत

	उपसर्ग	मूल शब्द
ख. संगति -	सम् +	गति
घ. कुमार्ग -	कु +	मार्ग
च. विशेष -	वि +	शेष

ए गए शब्दों में 'इत' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए।

उत्तेजना उत्तेजित
चर्चा चर्चित
निमंत्रण निमंत्रित

ख. प्रतिष्ठा प्रतिष्ठित
ङ. परिमार्जन परिमार्जित
ज. उत्साह उत्साहित

ग. स्थापना स्थापित
च. सुरक्षा सुरक्षित
झ. आकर्षण आकर्षित

इत' प्रत्यय से अधिकांशतः शब्द विशेषण बन जाते हैं। क्रिया के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। 'इत' प्रत्यय लगने पर शब्द के अंतिम न, ण, य और आ लुप्त हो जाते हैं।

सकता है। 'इत' प्रत्यय लगने पर शब्द के अंतिम न, ण, य और

उदाहरण के अनुसार एक शब्द बनाकर लिखिए।

क. जो सत्य में विश्वास रखता हो — सत्यनिष्ठ

ख. जो सत्य बोले — सत्यवादी

ग. जो विश्वास के योग्य हो — विश्वसनीय

घ. जो प्रशंसा के योग्य हो — प्रशंसनीय

ङ. जो जाना-पहचाना हो — परिचित

च. जिसे आशा न रह गई हो — निराश

दिए गए वाक्यों में रेखांकित पदों के विशेषण के भेद लिखिए।

क. <u>पहली</u> कठिनता उसे मित्र को चुनने में पड़ती है। — संख्यावाचक विशेषण

ख. संगति का <u>गुप्त</u> प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है। — गुणवाचक

ग. <u>थोड़ी</u> चतुराई या साहस देखकर लोग उसे अपना मित्र बना लेते हैं। — परिमाणवाचक

घ. <u>ऐसे</u> लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है। — सार्वनामिक

ङ. वे <u>उत्तम</u> संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे। — गुणवाचक

च. मित्रता एक <u>नई</u> शक्ति की योजना है। — गुणवाचक